सं.मो. वि./एफ.डी./-15-84/32080---चूंकि हिरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० एस. जी. स्टील्ज प्रा. जि. प्लाट नं. 6, सैक्टर-4. बल्लकगढ़. के श्रीमिक श्री पाखर सिंह तया उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भोदोगिक विवाद है ;

भीर जंकि हरियाणा है राज्यपन विवय को न्यायनिर्णय हेसु निर्दिष्ट कारना वांछनीय समझते हैं ;

इपलिए, श्रव भौद्योगिक विवाद श्रिधिनयम, 1947 की धारा 10 की उपधारः (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं. 5415-3-अम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं. 11495-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधनियम की धारा 7 के श्रवीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादमस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे तिखा मामला न्यायिनग्रय होंनू निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादमस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री पाखर सिंह की सेवाओं का समापन न्यायीचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, सी वह किस राहत का हकदार है ?!

सं भ्रो. वि/एफ.डी./45-84/32087 ---चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राग है कि मैं. एस० जी० स्टील्ज प्रा॰िल॰., प्लाट नं० 6, सैक्टर-4, बल्लबगढ़, के श्रमिक श्री जीत बहादुर, तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है :

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना, वांछनीय समझते हैं ;

इसेलिए. जब. श्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) हारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके हारा सरकारी श्रिधसूचना सं. 5415-3 श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरंबरी, 1958 हारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादाग्रस्त या उससे संसुगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिए निद्धि करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या ते विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रम्या संबंधित मामला है :--

क्या श्री जीत बहादुर की सेवाओं का समापन त्यायोचित तथा ठोक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हक्दार है?
सं. भो. वि/एफ. डी./45-84/32094---चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि में. एस॰ जो॰ स्टील्ज, प्रा॰ लि॰,
प्लाट नं॰ 6, सैक्टर-4, बल्लवगढ़, के श्रमिक श्री णिव सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में क्रोई
ग्रीद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रीबोगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 भी धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिमूचना सं. 5415-3-अम 68/15254, दिनांक 20 जुन, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रधिमूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रधिनियम को धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायासय, फरीदावाद, को विवादाग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्वन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादाग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत ग्रयवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री शिव सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? दिनांक 29 अगस्त, 1984

सं० बो०वि०/ब्राई०डी ०/करनाल/ 62/83/32309.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै० ठेकेदार जोगेन्द्र सिंह, सुपुत फूल सिंह थर्मल पावर पोर्जेक्ट ब्रासन, पानीपत के श्रीमक श्री राम मेहर सिंहतथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें दूइसके बाद लिखित मामले में कोई भौदोगिक विवाद है :—

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यांयनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, भ्रम, ग्रीद्योगिक विवाद ग्राधिनियम, 1947 की धारा, 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रवान की गईं भितियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना स. 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 19 श्रप्रैत,

1984 द्वारा उक्त अधिनियम की आहा 7 के अधीन गठिद श्रम न्यायालय, प्रस्वाला को विवादशस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा भामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है :---

क्या श्री राम मेहर सिंह की सेवाओं का समापत त्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं प्रो विश्विष्ण १४-८४/32315 - चूकि हिर्यामा के राज्याल की राये है कि मैं ा हिर्याणा रोडवेज, यमुनानगर 2 हिर्यामा राज्य रिवाहर नियंत्रक, चाड़ीकु के श्रिनित थी लेव राज है तर तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रोडोगिक विवाद है;

🗸 - 🖚 भीर चूंकि हरियाणा के राज्यवान निवाद को न्यंपनिर्यय हेतु तिर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद मधितिरम, 1947 की बारा 10 की उपबारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्य राज इसके द्वारा सरकारी श्रीविश्वचना सं 3 (44)-84-3-अम, दिनांक 18 अभैन, 1984 हारा उना प्रतिकान की बारा 7 के प्रश्नीन गठिन अमन्यायाच्य, प्रम्वाला को विवादप्रस्त या उमसे संबंधित नीचे लिखा मामला ल्याय-निर्णय के लिथे निर्देश्य करते हैं, जो कि उनत प्रवन्त्रकों तथा श्रीमिक की बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री लेख राज है हार को से नाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं भो वि./पानीपः!/37-84/32322 -- वृंकि हरियाणा के राज्यसल को राजे है कि (1) मैं सचित्र, हरियाणा राज्य निर्जाली बोर्ड, सैक्टर-17, चण्डीगढ़, (2) सुप्रोटैंडिंग इन्जोनियर (यागरेजन) सर्हल एच. एस. ई. जी. व करनाल, के श्रमिक श्री तरी तम चीपड़ा तथा उसके प्रजन्धकों के मध्य इसमें इस के आद लिखित ∤नामले में कोई श्रीशोगिक विवाद है:

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्याय निर्मय हेतू निर्विष्ट करना बोछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब, औशोगिक विवाद अधिनियम, 19 र की धारा 10 को उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों नाप्रयोग करते दुए, हरियाणा के राज्यसल इस के दारा सरकारी अधिनूचना सं० 3(44) 84-3-धम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अभोन गठिन श्रन न्यायलया, प्रम्वाला की विवादप्रस्त या उन्हें संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं. जो कि उक्त प्रवन्त्रकों तथा श्रीनक के बोज या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अधिन मामला है :---

क्या श्री नरीतम चौरड़ा की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं मो. वि/पानी रत/84-84/32329. -- वृंकि हरियाम के राज्यबात की राये है कि मैं. सुपर सोल इण्डिया, कुरुजपुरा रोड करनान, के श्रीमक नुमोला तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामने में कोई ग्रीशीमिक विवाद है ?

भीर वृक्ति हरियाणा के राज्यमात विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसिनए, अब, ग्रीबोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की घारा 10 की उप-घारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई सक्तियों का प्राोग करते हुए, हरियामा के राण्याज इस के द्वारा सरकारी अधिमूचना सं. 3(44) 84-3-अम, दिनांक 18 अप्रैच, 1984 द्वारा उक्त मित्रियम की धारा 7 के प्रश्नीन गठित अन न्यायाजय, अन्वाला की विवाद प्रस्त मा उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनियम के लिए - मिदिन्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रकान की तया अभिक के बीच या दी विवाद प्रस्त मामना है या विवाद से सुसंगत अध्या संबंधित मामला है:—

क्या सुशीला की सेवाझों का सनावत न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत की हकदार है ?